अनुवाद : क्या करें क्या न करें

अनुवाद : क्या करें

1. मूल पाठ के प्रति निष्ठावान रहें। इसके लिए यह आवश्यक है कि अनुवाद के लिए दी गई सामग्री को ध्यान से पढ़ा जाए और वाक्य संरचना का सम्यक विश्लेषण किया जाए तथा अंतर्निहित भाव को यथार्थ रूप में ग्रहण किया जाए।
2. वाक्य को इकाई मान कर अनुवाद करें।
3. मूल पाठ के लम्बे व जटिल वाक्यों को लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति के अनुरूप विभक्त करें।
4. मूल रचना के अंतर्गत वाक्य में शब्द के स्थान पर पूरा ध्यान दें। वाक्य में शब्द का स्थान बदल जाने से कभी-कभी भाव बदल जाता है।
5. लक्ष्य भाषा में समानार्थी शब्द को ढूंढते समय मूल पाठ के संदर्भ/प्रसंग/विषय का पूरा ध्यान रखें।
6. अनुवाद करते समय भाषेतर प्रसंग (Extra lingual reference) पर पूरा ध्यान दें।
7. अनुवाद सरल, सुबोध, और सहज भाषा में करें ताकि जिसके लिए अनुवाद किया जा रहा है वह उसे अच्छी तरह से समझ सके।
8. अनुवाद में अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा की प्रकृति और प्रवृत्ति के अनुकूल हो तथा उसमें पठनीयता और प्रवाह हो।
9. कभी-कभी विभिन्न विषयों में प्रयुक्त होने वाले शब्द या पदबंध बहि:केंद्रिक (eco-centric) होते हैं। उनका सामान्यत: ज्ञान या प्रचलित अर्थ नहीं होता। विषय-विशेष में अर्थ रूढ़ हो जाता है। ऐसे विशिष्ट शब्दों या पदबंधों का पूरा अथवा संदर्भगत अथवा रूढ़ अर्थ समझ कर अनुवाद करें।
10. अनुवाद करते समय जहां मूल पाठ के भाव को अक्षुण्ण रखा जाए वहां वाक्य विन्यास लक्ष्य भाषा की संरचना, प्रकृति और प्रयोग के अनुरूप रखा जाए।
11. पारिभाषिक, तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों के लिए केवल स्वीकृत पर्याय ही काम में लाएं। यदि स्वीकृत तकनीकी पर्याय उपलब्ध न हों तो मूल शब्द को ही लिप्यंतरित रूप में प्रस्तुत करें।
12. अनुवाद करते समय किसी संस्था के नाम का भाषांतरण उस समय तक न करें, जब तक यह सुनिश्चित न हो जाए कि उसका नाम लक्ष्य भाषा में भी रजिस्टर्ड या अनुमोदित है।
13. अंतरराष्ट्रीय संकेतों, सूत्रों और प्रतीकों को मूल रूप में ही लिखा जाना चाहिए।
14. अनुवाद में स्रोत भाषा की शैली को अक्षुण्ण रखा जाए। रचना का समग्र प्रभाव बना रहने से अनुवाद प्रामाणिक, सटीक और अर्थानुसार रहता है।
15. अनुवाद में मानक वर्तनी का अनुसरण करें, शब्दावली की एकरूपता का ध्यान रखें।

अनुवाद : क्या न करें

1. मूल पाठ के भाव को अच्छी तरह समझे बिना अनुवाद न करें, अन्यथा लक्ष्य भाषा में भाव विकृत हो जाने का डर है। अत: मूल पाठ के पढ़ने तथा मूल भाव को समझने में जल्दबाजी न करें।
2. शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद न करें, क्योंकि वाक्य का अपना वाक्यार्थ होता है।
3. लम्बे, अटपटे और जटिल वाक्यों की रचना न करें। अनुवाद में एक-वाक्यता अपेक्षित है, वाक्य का एक होना नहीं।
4. वाक्य में प्रयुक्त शब्द के स्थान को नजर-अंदाज न करें।
5. लक्ष्य भाषा में समानार्थी शब्द को ढूंढ़ते समय मूल पाठ के संदर्भ/प्रसंग की अपेक्षा न करें।
6. मात्र भाषा और अर्थ की पारस्परिकता (Lingual semantic relation) पर निर्भर न करें।
7. जटिल, लम्बे और अटपटे वाक्यों की रचना न करें, क्योंकि ऐसा करने पर अनुवाद क्लिष्ट, दुर्बोध और असहज हो जाता है।
8. अनुवाद करते समय स्रोत भाषा संरचना की नकल न करें
9. विभिन्न विषयों के ऐसे शब्दों या पदबंधों का अनुवाद उनके विशिष्ट/रूढ़ अर्थ को समझे बिना तथा शब्दश: न करें।
10. लक्ष्य भाषा की संरचना, प्रकृति और प्रयोग के प्रतिकूल वाक्य रचना न करें।
11. प्रत्येक शब्द को पारिभाषिक, तकनीकी अथवा वैज्ञानिक शब्द मान कर अनुवाद न करें।
12. नामवाचक संज्ञा का अनुवाद प्राय: नहीं करना चाहिए उसे केवल लिप्यंतरित करें।
13. स्रोत भाषा की अवहेलना करना उचित नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसके मूल कथ्य का समग्र प्रभाव विरूपित और विनष्ट हो सकता है।
14. लक्ष्य भाषा में क्षेत्रीय प्रभाव से बचें।

****